would take a proper decision and set up an office here so as to curb the incidence of fire in this place.

RE: RESTORATION OF NORMAL S.T.D. SERVICE AT BALUA BAZAR VILLAGE OF SUPAUL DISTRICT IN BIHAR

डॉ॰ जगन्नाथ मिश्र (बिहार): महोदया, मैं आपका आभारी हूं कि आपने मुझे बोलने का मौका दिया। बिहार में टेलीकम्युनिकेशन्स की परिस्थिति इतनी क्षत-विक्षत है कि सामान्य लोगों को तो असुविधा है ही लेकिन हमारे ही गांव बलुआ बाज़ार जो सुपॉल ज़िले के अंतर्गत है, वहां कि अवस्था पिछले जनवरी महीने से और भी दयनीय है। हमारी शिकायत गई। शिकायत के बाद भी कोई सुधार नहीं हुआ। उसका फल यह हुआ कि 18 फरवरी को एकाएक हमारे सगे बड़े भाई को हार्ट-अटैक हुआ। पूरी कोशिश करने के बावजूद भी निकट के किसी अस्पताल से उनका सम्पर्क नहीं हो पाया। मैं उस दिन पटना में था। पटना में हमें सूचना नहीं मिली। अगर पटना में भी सूचना मिलती तो पटना से विशेषज्ञ वहां पहुंचाए जा सकते थे, उन्हें वहां से लाया जा सकता था, उनकी जान को बचाया जा सकता था। हमारी शिकायत जनवरी महीने में थी टेलीकम्युनिकेशन्स डिपार्टमेंट से। बलुआ बाज़ार में यह एक्सचेंज काफी दिनों से कार्यरत है और यह लगातार बाधित है। वहां लोगों को सुविधाएं नहीं मिलती हैं और लोग काफी कष्ट में है लेकिन उनकी तरफ से कोई कार्यवाही नहीं हुई। सारे राज्य में टेलीकम्युनिकेशन्स की यही दुर्व्यवस्था है। इसलिए हमारे भाई श्री मृत्युंजय नारायण मिश्र की जो मृत्यु हुई है 18 तारीख को, उसके लिए मैं पूरी तौर पर टेलीकम्युनिकेशन्स डिपार्टमेंट को जिम्मेदार मानता हूं। अगर टेलीकम्युनिकेशन्स की सुविधा उस दिन होती तो डॉक्टर्स को बुलाया जा सकता था। मुझे पटना में सूचना मिलती तो मैं हवाई जहाज से जाकर उनको ला सकता था, पटना से वहां डॉक्टर भेज सकता था, उनकी जान को बचा सकता था। इसलिए मैं सरकार से अनुरोध करना चाहता हूं कि पूरे बिहार के टेलीकम्युनिकेशन्स की अवस्था जो ग्रामीण क्षेत्रों में है, बहुत खराब है। क्या मायने हैं पूरे गांवों में टेलीकम्युनिकेशन्स की व्यवस्था नाम के लिए देने की जब उसकी सुविधा मिलेगी ही नहीं, लाभ मिलेगा ही नहीं तो उसका जाल बिछाने के क्या मायने हैं? इसलिए बिहार की टेलीकम्युनिकेशन्स व्यवस्था की पूरे तौर पर जांच की जानी चाहिए और किन हालात में बलुआ बाज़ार एक्सचेंज कई महीनों से बाधित है, शिकायत के बावजूद भी उसमें सुधार नहीं हुआ है। पिछली 17-18 तारीख फरवरी को स्थानीय स्तर पर शिकायत पहुंचाई गई कि स्थिति को चालू करने की कोई व्यवस्था की जाए लेकिन वह नहीं की जा सकी जिसके फलस्वरूप मेरे बड़े भाई श्री मृत्युंजय नारायण मिश्र की मृत्यु हो गई। यह दुखद घटना घट गई है लेकिन आगे ऐसी घटनाएं न घटने पाएं, ग्रामीण क्षेत्र शहर से सम्पर्क स्थापित करने योग्य रह सकें, इसके लिए भारत सरकार इस विफलता के लिए सख्त से सख्त कार्यवाही करें और इस सेवा में सुधार लाने की कोशिश करे।

श्री एस॰एस॰ अहलुवालिया (बिहार): महोदया, मैं जगन्नाथ मिश्र जी के इस विशेष उल्लेख के साथ पूरा समर्थन करता हूं और मैं इस चीज़ को महसूस करता हूं। यदि सारे भारत का भ्रमण करने जाएं तो हर जगह दूरसंचार विभाग की बहुत उन्नति हुई है और सब जगह एस॰टी॰डी॰ मिलती है लेकिन दुर्भाग्य की बात है कि बिहार में दूरसंचार विभाग एकदम उदासीन है। इस सदन में दूरसंचार मंत्री ने कई बार वचन दिया कि हर पंचायत लेवल पर वायरलेस टेलीफोन लग जाएंगे और इनमें एस॰टी॰डी॰ फैसिलिटीज़ पूरी तरह से काम करेंगी लेकिन अभी तक पंचायत लेवल पर टेलीफोन नहीं लग सके। कई वर्षों से यह मांग उठती आई है, हर सांसद उठाता है इस मांग को पर वह पूरी नहीं की जाती है। आज तो एक एम॰पी॰ और फॉर्मर मुख्य मंत्री के भाई का देहांत हो गया इसलिए यह बात सदन तक पहुंच सकी है। रोज़ ऐसे कितनो भाइयों का देहांत होता है, कितने ऐसे पुत्रों और अन्य लोगों का देहांत हो जाता है जब उन्हें मेडिकल फैसिलिटी नहीं मिल पाती है या उनको किसी तरह का सहयोग नहीं मिल पाता है और उसके लिए दूरसंचार विभाग दोषी पाया जाता है। इस पर कारगार कदम उठाने के लिए मैं चाहूंगा कि आप सरकार को निर्देश दें कि इस पर पूरी विवेचना करने की, इसकी मॉनीटरिंग करने की ज़रूरत है।

डॉ जगन्नाथ मिश्र: मैडम, इस मामले की जांच के लिए आप निर्देश तो दीजिए, किस परिस्थिति में यह हुआ है?

श्री एस॰एस॰ अहलुवालिया: मैडम, आप सरकार को निर्देश दें क्योंकि यहां सरकार की तरफ से रीएक्ट करने के लिए कोई तैयार नहीं है ऐसे ईश्यूज़ पर भी। आप कम से कम सरकार को निर्देश दें कि इसकी जांच हो।

उपसभापति: आप बैठेंगे तो निर्देश करूंगी।

THE DEPUTY CHAIRMAN: Mr. Parliamentary Affairs Minister... (*interruptions*)... I think the former and the present Parliamentary Affairs Ministers are having a nice discussion.

SHRI M.A. BABY (Kerala): Madam, what is the affair?

THE DEPUTY CHAIRMAN: As long as it is limited to Parliament, we will be happy. If the affair goes out of this Parliament, then it will be beyond my jurisdiction.

SHRI M.A. BABY: It seems to be an internal affair.

THE DEPUTY CHAIRMAN: I hope so.

Mr. Minister, Mr. Jagannath Mishra has raised a very serious matter about the loss of life of his brother. There may be many others who are subjected to inconvenience because of non-availability of communication facility such as STD in the smaller towns. I believe there was a suggestion made in the past in this House. And the Minister of Communications accepted the suggestion and assured the House that he would take care of this. The Ministers concerned have time and again assured that there would be some way of communication in every panchayat. Now Shri Mishra has lost his brother. I would like you to convey to the Minister of Communications that he should look into this matter. We are going to enter the 21st century. It would not be proper if people have to suffer on account of lack of communication facilities even today.

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF URBAN AFFAIRS AND EMPLOYMENT AND MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF PARLIAMENTARY AFFAIRS (DR. U. VENKATESWARLU): Madam, I will certainly bring it to the notice of the Minister of Communications.

THE DEPUTY CHAIRMAN: You would not only bring it to his notice, you would also have to ensure that the wires are connected. I know your wire is connected with the Minister. But he has to connect all those places where there is such a problem.

RE: FALL IN PRICES OF RUBBER

SHRI JOY NADUKKARA (Kerala): Madam, rubber growers in this country are on the verge of eruption. There is a sharp fall in the prices of rubber in the recent months. In the month of May, 95, the per kilogram price of rubber was Rs. 60.50 ps and in June, 95, it was Rs. 61.70ps. In May, 96, it was Rs. 52.50ps and in June, 96, it was Rs. 53.80ps. Unfortunately, the per kilogram price of rubber last week was only Rs. 42.50ps. When you compare the current price of rubber with the price during 1995, there is a fall in the price of rubber by about Rs. 20/- per kilogram. The total loss caused to the rubber growers in this country during the last 3-4 months alone will amount to Rs. 550 crores.

There are about 8.65 lakh rubber cultivators in this country. Almost all of them are small farmers with small holdings. Their families are depending on the income generated from the rubber cultivation. In addition to them, There is an equal number of labourers who are connected with rubber cultivation, i.e., those who are engaged in tapping of the rubber. The total number of people who are dependent on rubber cultivation, therefore, comes to about 17 lakhs.

The total area under rubber cultivation in 1995-96 was 52 lakh hectares. This shows how important rubber cultivation is to the agricultural community in this country.

One of the important problems faced by the rubber growers is that the industry is not in a position to consume the rubber produced in this country. There is surplus rubber in this country. The estimated rubber production in 1996-97 would be 5.85 lakh tonnes. But the consumption is only 5.60 lakh tonnes. Thus, there will be 25,000 tonnes of surplus rubber in this country. Added to this is, there, the carry-over of the last year's stock which is about 16,000 tonnes. Apart from all this, about 20,000 tonnes were imported during 96-97. Thus, the surplus is going to be around 61,000 tonnes. In this situation, the intervention of the Central Government is very necessary. The Government has to take the following steps: Firstly, the STC, the NAFED and the Rubber Marketing Federation must enter the market and pruchase 30,000 tonnes of rubber from the domestic market and stock it for at least three months, until the lean period starts. The Government has to assure flow the credit from financial institutions to these agencies. If necessary, the Government should provide guarantees for the repayment of money.